भाषाविद् डॉ0 तिलक सिंह
अमृतमहोत्सव 'अभिनन्दन ग्रन्थ'

मुख्य सम्पादक

डॉ0 बबलू सिंह

सहायक प्रोफेसर हिन्दी विभाग
जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कालिज, अमरोहा (उ.प्र.)

सम्पादक

डॉ0 जीत सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
कु.मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर (उ.प्र.)

डॉ0 अर्जुन सिंह शिशौदिया

राष्ट्रीय कवि,
प्राचार्य-डॉ० राम मनोहर लोहिया चौबीसा महाविद्यालय
मोहाना, बुलन्दशहर (उ.प्र.)

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स
वी-508, गली नं.17, विजय पार्क,
दिल्ली-110053
मो. 08527460252, 09990236819
ईमेल: jtspublications@gmail.com

Scanned by CamScanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

भाषाविद् डॉ0 तिलक सिंह
अमृतमहोत्सव 'अभिनन्दन ग्रन्थ'
मुख्य सम्पादक
डॉ0 बबलू सिंह
सम्पादक
डॉ0 जीत सिंह
डॉ0 अर्जुन सिंह शिशौदिया

© सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : २०१९
ISBN 978-93-88522-20-5

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
नईम अहमद सिद्दीकी, अमरोहा।

प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२५२, ०११-२२९११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com

मूल्य : ५६५.०० रूपये

आवरण : प्रतिभा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली

विषय-सूची

क्रमांक	लेखक	पृष्ठ संख्या
1.	सम्पादकीय..... / डॉ0 बबलू सिंह	4
2.	भूमिका / डॉ0 बबलू सिंह	5
3.	शोध शिल्पी : डॉ0 तिलक सिंह (अमृतमहोत्सव अभिनन्दन गान) / डॉ0 रानी कमलेश अग्रवाल	7
4.	जीवन परिचय और अकादमिक उपलब्धियाँ / डॉ0 बबलू सिंह	9
5.	पारिवारिक और शैक्षिक विकास में जीवन-संगिनी श्रीमती मिथिलेश जी की भूमिका / डॉ0 तिलक सिंह	10
6.	'नवीन शोध विज्ञान' शीर्षक पुस्तक की समीक्षा पूर्व प्रोफेसर डॉ0 सुधाकर सिंह	14
7.	'हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास' पुस्तक की समीक्षा / पूर्व प्रोफेसर विजय कुलश्रेष्ठ	16
8.	अपने परिवेश के प्रति सजग प्रबुद्ध व्यक्तित्व : डॉ0 तिलक सिंह / डॉ0 अशोक मैत्रेय	17
9.	प्रतिभा, निस्पृहता और महत्त्वाकांक्षी / डॉ0 विजय दत्त शर्मा	20
10.	डॉ0 तिलक सिंह का संग पीपल-छाँव / डॉ0 नरेश मिश्र	24
11.	परिश्रम के पर्याय डॉ0 तिलक सिंह / डॉ0 राकेश अग्रवाल / डॉ0 रानी कमलेश अग्रवाल	26
12.	डॉक्टर तिलक सिंह-छोटे शहर की बड़ी हस्ती / अवधेश श्रीवास्तव	28
13.	डॉ0 तिलक सिंह : एक शोध ऋषि / डॉ0 अक्षय प्रताप 'अक्षय'	30
14.	सादगी और विचित्रता के महामानव / डॉ0 पीतांबर ठाकवाणी	32
15.	कर्मशील डॉ0 तिलक सिंह / डॉ0 प्रभात कुमार	34
16.	'नवीन भाषा-विज्ञान' शीर्षक पुस्तक की समीक्षा / डॉ0 बबलू सिंह	36
17.	डॉ0 साहब : एक प्रेरक व्यक्तित्व / डॉ0 गीता शर्मा	38
18.	स्मृति के वातायन से / प्रो0 सुचित्रा मलिक	42
19.	डॉ0 तिलक सिंह का उच्च शिक्षा के विकास में योगदान / डॉ0 निरंजन सिंह सिरोही	45
20.	श्रेष्ठ शैक्षिक मूल्यों के नियामक मेरे गुरुवर डॉ0 तिलक सिंह / डॉ0 बीना रानी गुप्ता	47
21.	गुरुः साक्षात् परंब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः / डॉ0 महेश चन्द्र शर्मा	50
22.	डॉ0 तिलक सिंह का पारिवारिक, शैक्षणिक एवं अकादमिक व्यक्तित्व / डॉ0 कुँवरपाल शर्मा	53
23.	अन्तःकरण पवित्र, सात्विक, विज्ञानी और तत्त्वज्ञानी डॉ0 तिलक सिंह जी / डॉ0 जीत सिंह	56

Scanned by CamScanner

अन्तःकरण पवित्र, सात्विक, विज्ञानी और तत्त्वज्ञानी डॉ० तिलक सिंह जी

•डॉ० जीत सिंह

परिचय–

डॉ0 तिलक सिंह जी निर्बल के सबल हस्ताक्षर हैं। इनका अन्तःकरण गंगा के निर्मल, स्वच्छ और शीतल जल की तरह है। कबीर, रैदास, नानक के समान सात्विक प्रवृत्ति के धनी हैं। शोध की पाठशाला के जनक शिष्यों की आँखों में स्वयं की सन्तान का चित्र देखने वाले डॉ0 तिलक सिंह जैसे मानव वर्तमान में दृष्टिगोचर नहीं हैं।

डॉ0 तिलक सिंह जी की चिन्तनशीलता एवं बौद्धिकता उच्च स्तरीय के साथ–साथ समाज को जोड़ने का काम करती है। आपके विचार तत्त्व कालजयी जैसे प्रतीत होते हैं–

"नदी के माने ही हैं रोध और तट। प्रेम के माने ही हैं अनुशासन। प्रवृत्ति को पूर्ण करती है निवृत्ति। रमण तृषा को पवित्र करता है संयम वृत। भारतीय संस्कार साधना ने इस तथ्य को अतल आत्मिक धरातल पर उतारकर ग्रहण किया है। यही है हिन्दुस्तानी मन का सम्पूर्ण और सम्पृक्त बोध।"

आपका जन्म 20 जनवरी, सन् 1944 अलीगढ़ जनपद के सेहौर ग्राम में हुआ। आसके पिता जी का नाम श्री चुन्नी सिंह तथा माता जी का नाम कौशल्या देवी था। आपका परिवार मध्यम वर्गीय कृषक से सम्बन्धित था। आपकी शादी मिथलेश कुमारी के साथ हुई। वर्तमान में इनके तीन पुत्र डॉ0 प्रशान्त कुमार, हिमांशु तथा अभिषेक आर्यन हैं। इनकी एक पुत्री डॉ0 मनीषा हैं। सभी पुत्र–पुत्री विवाहित हैं।

हिन्दी साहित्य में योगदान–

आप उच्च कोटि के विद्वान, शोधक, दार्शनिक, लेखक, आलोचक, वक्ता, सम्पादक तथा भाषा वैज्ञानिक है। हिन्दी साहित्य में विशेष अभिरूचि है। इनकी प्रमुख कृतियाँ निम्नवत हैं –

1. नवीन शोध विज्ञान
2. नवीन भाषा विज्ञान
3. हिन्दी भाषा और साहित्य का इतिहास
4. रामचन्द्रिका की भाषा में परसर्ग विधान

संस्थाओं द्वारा पुरस्कृत –

1. नागरी संगम नई दिल्ली।
2. साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद।

संस्थापक –

1. हिन्दी साहित्य परिषद, हापुड़।
2. शोध परिषद, हापुड़।

शोधार्थियों की परम्परा

वास्तव में आपने ऐसे शोधार्थियों को शोध कार्यों से जोड़ा, जिन्होंने अपने जीवन में कभी कल्पना मात्र भी न की थी। विद्यार्थियों में हिन्दी विषय की रूचि उत्पन्न करना तथा उन्हें मंच से जोड़ना इनकी नियति में ही समाहित है। शोध के क्षेत्र में आपने किसी को निराश नहीं किया बल्कि गुरू ही नहीं पितामह की तरह सम्बल भी दिया। मैं स्वयं इसका उदाहरण मात्र हूँ। छात्र ही नहीं छात्राओं को भी शोध कार्यों से सम्बद्ध किया। कई छात्राओं ने कई वर्षों तक प्रतीक्षा की तथा स्वयं को इनकी शिष्य परम्परा से जुड़ना गौरवान्वित महसूस किया। आपने 100 शोधर्थियों को विद्या वाचस्पति की उपाधि से सुशोभित कराया। आपका अधिकतम शोध कार्य भाषा विज्ञान पर आधारित है।

अन्तःकरण पवित्र एवं सात्विक गुणों की खान

डॉ0 तिलक सिंह जी का व्यक्तित्व गुणों का भण्डार है। अहंकार से रहित, ज्ञान के प्रकाश विपुल से युक्त और वात्सल्य की ठण्डक बरसाने वाला उनका व्यक्तित्व हर किसी के अनायास आकर्षित कर लेता है। मैं स्वयं यह मानता हूँ कि मेरे जीवन का जो समय उनके संसर्ग में बीता है उससे मैं धन्य हो गया हूँ। गुरूवर का साहचर्य अत्यन्त सरस ज्ञानवर्धक, आत्मीयतापूर्ण है। उनकी उज्ज्वल हँसी की आभा से सबको प्रसन्नता एवं स्निग्धता प्राप्त होती है। उनके संसर्ग में उदासी हताशा, कुण्ठा पास तक नहीं आती। मुस्कराते–मुस्कराते वे ज्ञान की ऊँची बातों को सहज बनाकर शोधार्थियों के हृदय तक पहुँचाते हैं।

विज्ञानी और तत्त्वज्ञानी–

अध्ययन मस्तिष्क का व्यायाम है। जिस तरह एक अच्छे कसरती का शरीर सुडौल और सुगठित हो जाता है, वैसे ही अच्छे अध्येता का मस्तिष्क सुन्दर और सुसंस्कृत हो जाता है। एक सुन्दर और आकर्षक व्यक्तित्व को जन्म देते हैं। ऐसे गुणों के तत्वज्ञानी डॉ0 तिलक सिंह जी हैं। मेरे गुरूवर में एक गुण सर्वोपरि है वो है परनिन्दा से बहुत दूर तथा गुरूजी को किसी भी मानव के व्यक्तिगत जीवन में झांकने आंकने एवं मापने की जिज्ञासा कभी नहीं हुई।

एक अनूठे भाषा आराधक–

कुछ बहुप्रतिभावान व्यक्तित्व ऐसे होते हैं, जिन्हें एक सम्बोधन से परिभाषित नहीं किया जा सकता वह मेरे गुरूवर हैं पिता तुल्य, दिशा निर्देशक।

गुरू ब्रह्मा, गुरू विष्णु, गुरू देवो माहेश्वरः, गुरू साक्षात् परब्रह्मः तस्मै श्री गुरुवै नमः। ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के लिए मेरे अनुसार श्रद्धानिष्ठ सम्बोधन सबसे उचित रहेगा। जो किसी की श्रद्धा में प्रतिष्ठित हो गया, वह हर रूप में श्रद्धेय ही रहेंगे।

अन्ततः श्रद्धानिष्ठ डॉ0 तिलक सिंह जी की गुरू वन्दना में स्वयं की कुछ पंक्तियाँ –

शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन
शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन
शत्–शत् तुम्हें सबका नमन
शत्–शत् तुम्हें सबका नमन।

Scanned by CamScanner

पावन तुम्हारा आचरण,
निर्मल तुम्हरा यश–गगन,
शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन।
तुम कर्मयोगी, शांत इक,
तुम धर्म प्रिय महन्त इक
मात्रा, लिपि, छन्द हो तगण
शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन।
शत् शोध तुम से धनी
पत्थर किये तुमने मणि
कंचन किया हर काँच को
तुम दानवीर अनन्य हो,
आदर्श पुरूष तुम हो मगन,
शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन।
भाषा विज्ञानी बन, परहित जिए
विश्व साहित्य के जन–जन
तुमको करे शत्–शत् नमन।
तुमको समर्पित श्रद्धा सुमन,
शत्–शत् तुम्हें मेरा नमन।

एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग
कु.मायावती राजकीय महिला स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, बादलपुर गौतमबुद्ध नगर।

❑❑❑

Scanned by CamScanner